

लोकतंत्र के प्रकार - Types :-

लोकतंत्र जीवन का एक तरीका है, यह विभिन्न विचारधारानों का एक सर्वमान्य रूप है। लोकतंत्र को शासन के भिन्नभिन्न निम्नलिखित विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया जा सकता है :-

- ① प्रविनिधि लोकतंत्र
- ② सहभागिता पूर्ण " "
- ③ मंत्रपालिका " "
- ④ सामाजिक " "
- ⑤ सार्वभौम " "

① प्रविनिधि लोकतंत्र :- लोकतंत्र में बहुत बड़े और जटिल समाजों में संभव नहीं होता क्योंकि सभी नागरिक निर्णय प्रक्रिया में सीधा भागीदारी नहीं कर पाये, इसलिए अपने मनोरथों एवं आवश्यकताओं को पूर्ण के लिए वे अपने मनोरथों एवं आवश्यकताओं को पूर्ण के लिए अपने प्रविनिधि चुनते हैं। हाब्स एवं लोक के लिए प्रविनिधि सरकार एक ऐसा सरकार है जो लोगों द्वारा उनका और सकार्य करने के लिए अधिकृत होता है। इसका दृष्टि में प्रविनिधिओं के मत तथा हित कभी भी अपने लोगों से अलग नहीं हो सकते, इसलिए राज्य पर संपूर्ण सत्ता नागरिकों एवं उनकी आम इच्छा के द्वारा ही होनी चाहिए। वर्तमान में लोकतंत्र प्रेरणा के विशान्वयन का सबसे अच्छा उपाय बहुमत सिद्धांत पर आधारित

(2)

प्रतिनिधि सरकार है। किंतु प्रतिनिधि लोकतंत्र का आलोचना में कुछ विचारकों का मत है। शुम्पीटर एवं संभ्रांत सिद्धान्तवादी - इस दृष्टिकोण के मानने वाले प्रतिनिधि सरकार को अयथाथवादी मानते हैं। लोकतंत्र में संभ्रमता उन लोगों के हाथों में होती है जो व्यक्तियों को एक ऐसा समाज के चुनते हैं जहाँ उनके मनोरथ किसे जा सकत है। इसका मुख्य अर्थ इस दृष्टिकोण के मानने वाले लोकतंत्र को अयथाथ मानते हैं। वास्तव में प्रतिनिधि लोकतंत्र का मुख्य उद्देश्य प्रत्याशियों के विशाल समूह में कुछ नेताओं को चुनना है जो कि व्यक्तियों के वोटों को धिरे संघर्ष करते हैं। लोग केवल किसी नेता विशेष को अपना समर्थन मात्र देते हैं। वास्तव में नेतृत्व ही मुख्य परिचायक बल है। यही लोकतंत्र का यथाथवादी सिद्धान्त है।

(2)

सहभागितापूर्ण - लोकतंत्र :- इसी का सिद्धान्त नागरिकों के बीच परस्पर निर्भरता पर आधारित है। इनके अनुसार कोस में राजनैतिक निर्णय नागरिकों को मागी दारी नागरिकों के हितों को रक्षा करने तथा अच्छी सरकार बनाने के साधन के रूप में महत्वपूर्ण है। प्रत्यक्ष सहभागितापूर्ण लोकतंत्र विशाल जन-समाज में संभव नहीं है, फिर भी कैरोल पैटमैन द्वारा बेजामिन - बार बार सहभागितापूर्ण लोकतंत्र को समर्थन करते हैं। इससे

स्थानीय लोकतंत्र को मजबूत किया जा सकता है। नागरिकों को सामूहिक कार्यों एवं गतिविधियों में सक्रिय तथा राजनैतिक रूप में वाचनबद्ध करने के लिए नागरिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए जिससे अनाधिकारी सत्ता को दुरुपयोग न कर सके।

3. मंत्रणात्मक लोकतंत्र :- यह लोकतंत्र लोगों को स्वतंत्र व्यक्तियों के रूप में देखता है, किंतु इनके बीच सामाजिक संबंधों को नजर में रखा करता है। यह सार्वजनिक महत्व के मसलों पर सार्वजनिक विचार-विमर्श और बल देता है। यह लोगों में सामाजिक संबंधों के स्थान पर यह मानता है कि वे स्पष्ट तर्क एवं विश्वास के द्वारा एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह स्व-शासन के लिए लोगों को क्षमता को महत्व देता है। यह नागरिकों तथा राजनैतिकों के महत्व को राजनैतिक विभाजन को मान्यता देता है। मंत्रणात्मक लोकतंत्र राजनैतिक सत्ता को सर्वोच्च आधार देते करने के विश्वास को मानता है।

4. सामाजिक - लोकतंत्र :- सामाजिक लोकतंत्र में अधिक समतावादी है। यद्यपि माक्सवादी लोकतंत्र का अपेक्षा कम प्रतिकारी। यह समानता के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञा पर आधारित होता है। सामाजिक लोकतंत्र, प्रतिनिधि लोकतंत्र

(4)

को उदारवादी संस्थाओं में विश्वास करने के साथ उन्हें सामाजिक न्याय के साथ जोड़ने का भावना है। पुरुषों, यह लोकतंत्र और समाजवाद के बीच की व्यवस्था है। यह मूल रूप से समानता के परिधि तिर्यो पैदा करना चाहता है जिससे सभी नागरिक अपने - अपने अधिकारों का उपयोग समान रूप से कर सकें। यदि लोग दरिद्रता, अल्पसंख्यकता किसी भी कारण से अपने निर्वाचनों को पूरा कर पाने में सक्षम नहीं हैं, तो इन बाधाओं को दूर करना भी राज्य का कर्तव्य है। सामा. लोकतंत्र महिलाओं, वृद्धों, कमजोर सांस्कृतिक अल्पसंख्यक वर्गों के कल्याण के लिए वातावरण पैदा करता है।

1) शार्वमौम - लोकतंत्र :- आर्थिक और सांस्कृतिक मुमंडलीकरण के विकास के साथ लोकतंत्र का क्षेत्र में विस्तृत हो गया। शार्वमौम लोकतंत्र राजनीतिक लिहातवा दिशों द्वारा मुमंडलीकरण के कारण विकसित हुआ है। यह इस मुमंडलीकरण सम्य समाज की और इंगित करता है जो नीचे से मुमंडलीकरण का घटना द्वारा रचित हो रहा है। इसके ही उदाहरण है - नारी आंदोलन तथा पर्यावरण आंदोलन। दूरसंचार और इंटरनेट ने संसार को जोड़ दिया है। विश्व व्यापार संगठन के अधिकार सक्षम विकास शील है।

|| Stop ||